Inspira-Journal of Commerce, Economics & Computer Science (JCECS)
p-ISSN : 2395-7069 (Impact Factor : 2.0546) Volume 03, No. 02, April - June, 2017, pp. 325-328

जवाहरलाल नेहरू और लोकतांत्रिक समाजवाद

डॉ0 आलोक कुमार सिंह*

नेहरू जी के अनुसार लोकतन्त्र सर्वोत्तम शासन व्यवस्था है। लोकतन्त्र एक गतिशील धारणा है। नेहरू जी ने संबिधानवाद और नागरिक अधिकारों पर विशेष बल दिया। वे सत्ता के विकेन्द्रीकरण में विश्वास रखते थे इलिये उन्होंने 21 अक्टूवर 1959 को लोकतान्त्रिक विकेन्द्रीकरण की योजना अपनाई थी। नेहरू जी को संसदीय व्यवस्था की श्रेष्ठता में भी पूरा विश्वास था। नेहरू जी ने लोकतान्त्रिक आचरण का उत्तम उदारहण प्रस्तुत किया। उनका करिश्माई नेतृत्व एक मिसाल है।

राजनीतिक क्षेत्र में लोकतंत्र और आर्थिक क्षेत्र में समाजवाद के बीच में समन्वय ही लोकतान्त्रिक समाजवाद है। इस प्रकार पं0 नेहरू ने समाजवाद को अपने ही ढंग से लिया है। उनका कहना था कि समाजवाद व्यक्ति के महत्व को समाप्त नहीं करता है बल्कि उसकी महत्ता को बढ़ा देता है। नेहरू जी ने भात में लोककल्याणकारी राज्य की स्थापना की घोषणा की थी। पर अवाड़ी अधिवेशन में उन्होंने सहकारी खेतों का विचार रखा। उनके विचार सदा बदलते रहे पर इतना वे हमेशा कहते रहे कि ''समाजवादी समाज में उत्पादन और वितरण के साधनों पर व्यक्तिगत स्वामित्व नहीं होना चाहिए।'' यही समाजवाद का मुख्य आधार है। एक बार समाजवाद पर विचार प्रकट करते हुए उन्होनें कहा कि ''मैं उग्र प्रकार का समाजवादी नहीं, मैं राज्य को सर्वशक्तिसम्पन्न जैसा कि समाजवाद चाहता है, देखना पसन्द नहीं करता हॅू। ऐसा राज्य जो सभी कार्यकलापों का संचालन करता है, मेरे लिये आदर्श नहीं। मैं तो केन्द्रीकरण नहीं, विकेन्द्रीकरण का पक्षपाती हूँ''। समाजवाद को अपनाने का कारण बताते हुए नेहरू जी ने कहा था कि ''हमने समाजवाद का उद्देश्य इसिलए नहीं अपनाया है कि यह हमें ठीक तथा लाभकारी लगता है, बल्कि इसलिए भी स्वीकार किया है कि हमारी आर्थिक समस्याओं के समाधान के लिए हमारे सामने अन्य कोई मार्ग न था। बहुधा कहा जाता है कि शान्तिपूर्ण एवं संवैधानिक उपायों से तीब्र गति से उन्नति नहीं होती, यह बात मैं नहीं मानता हूॅ।

नवम्वर, 1927 में नेहरू ने सोवियत संघ की संक्षिप्त यात्रा की। उस यात्रा के दौरान उन्होंने स्वयं अपनी आँखों से उस देश की उन महान उपलब्धियों को देखा जो उसने शिक्षा, स्त्री–उद्धार तथा किसानों की दशा के सुधार के क्षेत्र में प्राप्त की थीं। किन्तु अपनी पुस्तक ''**सोवियत रशिया**'' में जिनकी रचना उन्होंने 1928 में की थी, नेहरू ने रूस के सम्बन्ध में निश्चयात्मक रवैया नहीं अपनाया। फिर भी वे उस देश में जो कुछ हो चुका था और हो रहा था उसकों मानव शक्ति की तात्विक और नाटकीय अभिव्यक्ति मानते थे। उनका विचार था कि आज विश्व को जिन समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है, उनका समाधान ढूँढ़ निकालने में रूस के उदाहरण से सहायता मिल सकती है। 1927 में रूस से लौटने के बाद उन्होंने समाजवाद के विचारों को लोकप्रिय बनाने का कार्य आरम्भ कर दिया।

लोकतान्त्रिक समाजवाद के प्रति पूर्णतः समर्पित पण्डित नेहरू ने भारत में लोकतान्त्रिक समाजवाद की आधारशिला रखी। वे लोकतन्त्र एवं समाजवाद को परस्पर पूरक मानते थे। पण्डित नेहरू ने लोकतान्त्रिक समाजवाद में निम्न दो बातों पर बल दियाः–

* अध्यक्ष, राजनीतिशास्त्र विभाग, डी0एन0पी0जी0 कॉलेज, फतेहगढ़, उत्तर प्रदेश।